International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्मनिर्भर भारत और गाँधीजी

डॉ. जयदीप
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल
(उपनिदेशक, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर)

भौतिक संसाधनों की दृष्टि से भारत प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध देश रहा है। भारत 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना के साथ आगे बढ़ा है। यही कारण है कि हमारी पंचवर्षीय योजनाओं का मूल लक्ष्य ही आत्मनिर्भरता प्राप्त करना रहा है। प्रथम दो योजनाओं में आत्मनिर्भरता की नींव रखी गई जिसे आयात–प्रतिस्थापन जैसी अवधारणाओं के माध्यम से लागू किया गया। इसके मूल में कहीं–न–कहीं गाँधीजी के स्वदेशी आंदोलन की अनुगूंज सुनाई देती है।

गाँधीजी 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। गाँधीजी के चिंतन में स्वदेशी की अवधारणा का व्यावहारिक स्वरूप खादी एवं कुटीर उद्योग के रूप में सामने आता है। स्वदेशी को गाँधीजी ने चरखा एवं खादी के सन्दर्भ में विश्लेषित किया है। स्वदेशी का अर्थ है अपने देश से सम्बन्धित राजनीतिक धरातल पर राष्ट्रवाद। स्वदेशी के सम्बन्ध में गाँधीजी व्यक्ति के जीवन को धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक धरातल पर बाँधते हैं। स्वदेशी का सिद्धांत अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व का है। भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में चरखे का आर्थिक पहिए के रूप में महत्त्व देखा जा सकता है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में चरखा प्रचलन में था। चरखा एक हस्तचालित यंत्र है जिससे सूत काता जाता है। भारत में मुख्यतः दो प्रकार के चरखे प्रचलन में आए– प्रथम खड़ा चरखा, दूसरा अम्बर चरखा।

18 अप्रैल, 1921 को गाँधीजी ने वर्धा में सत्याग्रही आश्रम की स्थापना की थी। इस समय गाँधीजी ने कांग्रेस में करोड़ों सदस्यों की भर्ती की और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। गाँधीजी पर असहयोग आंदोलन के बाद राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें 6 वर्ष की सजा सुनाई गई थी, किन्तु स्वास्थ्य खराब होने की वजह से उन्हें 2 वर्ष में ही रिहा कर दिया गया।

ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जब गाँधीजी जेल से मुक्त होकर आए तो उन्होंने महसूस किया कि असहयोग आंदोलन पुनः प्रारम्भ करना असम्भव है। इसलिए उन्होंने जीवन का कुछ समय त्रीसूत्री कार्यक्रम खादी, हिन्दू–मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता उन्मूलन लागू करने में व्यतीत किया।

''गाँधीजी का मानना था कि सारे कार्यक्रम की कुंजी चरखा चलाना है। चरखे के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति की जा सकती है। दिसम्बर, 1924 में कांग्रेस को बेलगाव में अधिवेश हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता खुद गाँधीजी ने की थी। यहीं से उन्होंने खादी का श्रीगणेश किया। उन्होंने कहा खदर का अभियान छेड़ा जाय। कांग्रेस के कार्यकर्ता को खदर का सिद्धांत मनवाने के लिए उन्होंने कांग्रेस को इस बात के लिए लिखा था कि चार आने का शुल्क देकर सदस्यता प्राप्त करने के बजाय वही सदस्य मताधिकार के प्रयोग का अधिकारी माना जाय जो 2000 गज प्रतिमास सूत काते।''[1]

इस अधिवेशन में गाँधीजी ने लोगों से अपील की कि ''आप लोग जिले के हर भाग में जाए और खदर, हिन्दू–मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता उन्मूलन का संदेश घर–घर पहुँचाए। देश के नवयुवकों को अपना अनुयायी बनाओ और उन्हें स्वराज के असली सैनिक के रूप में ढालो।''[2]

गाँधीजी भारतीय जनता का ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर खींचना चाहते थे। अतः उन्होंने 22 सितम्बर, 1925 को पटना में चरखा संघ की स्थापना की। इसके बाद गाँधीजी ने बंगाल, यूपी, बिहार, गुजरात, मद्रास इत्यादि स्थानों की यात्रा की और चरखे का प्रचार–प्रसार किया। गाँधीजी बंगाल से बड़े प्रभावित थे उन्होंने कहा बंगाल में बहुत ऐसे क्षेत्र है जहाँ विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। सूत कातने की बंगाल की प्रतिभा को बड़ा सराहा और सारे भारत से सोदपुर खादी प्रतिष्ठान का अनुकरण करने को कहा।

सूत कातने कि बंगाल की प्रतिभा को उन्होंने बड़ा सराहा और सारे भारत से सोदपुर खादी प्रतिष्ठान का अनुकरण करने को कहा।

गाँधीजी का यह अभियान काफी सरल रहा था। मसलन स्वराज्य पार्टी के नेता मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में सड़कों पर खादी खदर बेची थी, स्कूल के बच्चों ने भी

इसमें हिस्सा लिया था। छात्रों से कहा गया ''गाँवों और हमें प्रेमसूत्र में बाँधने वाला एकमात्र साधन चरखा है।''

गाँधी के खादी अभियान में दो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, प्रथम विटलदास जेराजनी दूसरे कन्हैयालाल थे। कन्हैयालाल एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने महात्मा गाँधी की स्वाधीनता, स्वराज्य और स्वदेशी की भावना से समग्र अनुप्रमाणित हो ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी निभाई है। वे अपने कंधों पर खादी के थान लादे गाँव–गाँव घूमते। खादी पहनने का प्रचार–प्रसार करते थे। जब गाँधीजी ने उन्हें देखा तो खादिवाला के नाम से संबोधित किया। तब से कन्हैयालाल खादीवाला के नाम से जाने गए ये ही नाम उनकी गोत्र और पहचान बन गया,[3] जेराजानी गाँधी के विचारों से काफी प्रभावित थे। उन्होंने अपने हजारों रुपयों के विदेशी व्यापार को तिलांजलि देकर खादी के प्रचार–प्रसार में लग गए और जीवनपर्यंत तक करते रहे।

गाँधीजी औद्योगिक रण के कट्टर विरोधी थे। उनका विचार था कि बड़े पैमाने पर उत्पादन से सामाजिक एवं आर्थिक दोष उत्पन्न होते हैं। ''मशीनों के उपयोग से मनुष्य आलसी हो जाता है और उसको अपने परिश्रम में कोई रुचि नहीं रहती। वह एक ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे जिसमें मजदूर खुद स्वामी हो। ऐसी अर्थव्यवस्था में मजदूरों के शोषण का कोई अवसर ही नहीं है। गाँधीजी मशीनों के विरोधी नहीं थे, वे कहते थे कि मनुष्य का शरीर पर चरखा भी मशीन है, किन्तु वे उस मशीन के विरोधी थे जिसके उपयोग से शरम को बचाने की चेष्टा की जाती हैं। मनुष्य परिश्रम को बचाते चले जाते जिसका परिणाम यह होता है कि लाखों व्यक्ति सड़क पर घूमते–फिरते और भुखमरी बढ़ जाती। उन्होंने कहा मैं समय और श्रम की बचत करना चाहता हूँ, किन्तु मानव जाति के कुछ भाग के लिए नही सभी के लिए।''[4] आज मशीन केवल थोड़े से व्यक्तियों को करोड़ों की पीठ पर चढ़ने में सहायता करती है। इसलिए गाँधीजी ने खादी का समर्थन किया।

''ग्रामीण सर्वोदय गाँधीजी का महान् आदर्श था। गाँधीजी की इच्छा थी कि पुरातनकाल के ग्रामीण समुदायों की फिर से स्थापना की जाए। उनमें समृद्धशाली कृषि,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकसित उद्योग और छोटे–छोटे पैमाने के सहकारी संगठन स्थापित किए जाए। जिस प्रकार प्राचीनकाल में भारत के लोग भारत में उत्पादित वस्तु का प्रयोग करते, वस्तु विनिमय के द्वारा व्यापार होता था। गाँवों में विभिन्न प्रकार के वर्ग के लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते थे।''[5] मसलन लोहार लोहे का, चर्मकार चमड़े का, कुंभकार मिट्टी के बर्तन बनाने का आदि। इससे समस्त गाँवों के लोग एक–दूसरे पर निर्भर थे और एक–दूसरे के सहयोग से काम चलाते थे। इस प्रकार गाँधीजी खादी के माध्यम से भारत की पुरातन व्यवस्था को पुनः जीवित करना चाहते थे। अतः गाँधीजी का भारत गाँवों में था न कि शहरों में।

गाँधीजी चरखा के माध्यम से न केवल देश के लोगों को स्वावलम्बन की शिक्षा दे रहे थे बल्कि खादी के माध्यम से वे देश में एकता स्थापित कर रहे थे। इनका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ–साथ भारतीयों में राजनीतिक चेतना जगाना भी था। खादी अभियान के माध्यम से देश के सभी वर्ग हिन्दू–मुसलमान, शूद्र आदि को साथ लेकर देश को स्वतंत्र कराने का प्रयास कर रहे थे। गाँधीजी ने यंग इंडिया में लिखा ''खदर द्वारा निर्धन लोग गरीबी की जंजीरों से मुक्ति पाते है और विभिन्न खदर वर्गों और लोगों के बीच नैतिक और आध्यात्मिक एकता स्थापित होती। खदर में बड़ी जबरदस्त संगठन शक्ति है क्योंकि खदर अपनाने के लिए संगठन करना पड़ता है और पूरा भारत इसका कार्यक्षेत्र है। इसलिए मैं धन के न्यायोचित वितरण के लिए कार्य करता हूँ। यह कार्य मैं खदर द्वारा करना चाहता हूँ। यह कार्य ब्रिटिश शोषण के केंद्र को ही शुद्ध करता है। इसलिए इससे ब्रिटेन का पवित्रीकरण करना होगा। इस प्रकार खादी स्वराज्य का मार्ग है।''[6]

खादी अभियान से महिलाएँ काफी प्रभावित थी। खादी कार्य के विकास और प्रचार में महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया था। ''गाँधी सेवा सेना, भगिनी समाज, भाटिया में स्त्री मंडल आदि महिला संस्थाओं ने अभियान का मार्ग प्रशस्त किया। सरोजिनी नायडू महिलाओं में अग्रणी नेता थी। इन संस्थाओं की महिलाएँ घर–घर में जाकर खादी का प्रचार करती थी। अनेक प्रदर्शनियों में उच्च कुटुंब की महिलाओं ने खादी विक्रेता के स्थान पर अपनी सेवाएँ प्रदान की थी।''[7] अब महिलाएँ अपने दैनिक

जीवन का कार्य करने के बाद अपना अधिकांश समय सूत कातने में व्यतीत करने लगी। इससे महिलाओं को रोजगार मिला और समाज में कुछ हद तक सम्मान मिलने लगा। महिलाओं के कार्य करने से पुरुषों पर परिवार का आर्थिक भार कम हुआ। इस प्रकार महिलाओं की स्थिति में सुधार आया।

समाज में निम्नवर्ग की दशा बड़ी दयनीय थी। उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। उनका मुख्य कार्य साफ–सफाई का था। गाँधी के खदर अभियान के माध्यम से उनकी हालत दशा में सुधार करने का प्रयास किया और समाज के अन्य वर्गों के समान उन्हें भी इस आंदोलन में शामिल किया। हरिजनों के इस आंदोलन में शामिल होने के बाद उनकी दशा में जो सुधार आया उसके बारे में गांधी 1933 में मद्रास प्रदर्शनी में कहा ''एक स्वदेशी क्या हो सकता है, हरिजनों के लिए प्रदर्शनी करते हैं, आप पूछ सकते हैं कि मुझे लगता है कि खादी को इसके साथ बहुत कुछ मिला है, क्योंकि हाथ से कताई और कपड़े की बुनाई आपको जानकर आश्चर्य होगा, आराम और प्रकाश की किरण लाया है। हजारों और हजारों हरिजनों के अंधेरे घरों में। मुझे इस छोटे से दौर के दौरान भी कई जगहों पर जाने का मौका मिला और हरिजनों के लिए खादी की शक्ति की खोज की। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बहुत–सी चीजें हैं, मुझे उम्मीद है कि उन चीजों का प्रदर्शन था किया गया है। हरिजनों ने काम किया अधिकांश भाग के लिए।''[8]

गाँधी के खादी अभियान का प्रभाव मजदूरों, किसानों, शूद्रों आदि के साथ–साथ छात्रों पर भी पड़ा। हजारों संख्या में छात्रों ने खादी अभियान में गाँधी का समर्थन किया। गाँधीजी ने अक्टूबर 1927 में छात्रों को कालीकट में संबोधित करते हुए कहा–''मैं निश्चितता के साथ कह सकता हूँ, अगर आप इस प्रयास में गौरव लाना चाहते है, कुछ रचनात्मक कार्य करो। ऐसा करने से आप अन्य छात्रों के लिए उदाहरण बनेंगे। खादी पहली चीज है जिसके बारे में बात करेंगे आप इसे पहनकर और बेचकर ज्यादा सेवा प्रदान कर सकते है। जब तक समझौता नहीं हो जाता तब तक आप इस काम को कर सकते है और आगे बढ़ना चाहते है तो इसे यहाँ लाए और इसका अलाव जलाय। विदेशी कपड़े आपके लिए बहुत अधिक ऋण लेकर आयेंगे। आप उस खदर के बारे में

एक लेख देखेंगे जिसे हम विदेशी कपड़े का उपयोग करके भारत में ला रहे थे। आपके पास कम–से–कम कुछ बचा होना चाहिए। अब आप यह काम करेंगे तो सरकार को भी यकीन हो जाएगा कि अब छात्रों ने काम करना शुरू कर दिया है।''[9]

इस प्रकार समाज के सभी वर्गों ने गाँधी के खादी अभियान को सफल बनाने का प्रयास किया। गाँधी के खदर अभियान से भूमिहीन कृषकों, शूद्रों, श्रमिकों, महिलाओं को रोजगार मिला। इनके अतिरिक्त समाज के कुछ ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक रूप से किसी भी प्रकार का कार्य करने में सक्षम नहीं थे खादी उनके भी जीवन का आधार बनी। मसलन, खादी अभियान में गाँधी के सहयोगी रहे जेराजानि लिखते हैं– ''जब वे तमिलनाडु के एक छोटे से कस्बे तिरुपुर में गए तो उन्होंने वहाँ एक बूढ़ी औरत को सूत कातते देखा। इसी क्षेत्र में एक अंधा व्यक्ति खादी व्यापारियों का प्रमुख था। इसी संदर्भ में जेराजनि एक ओर घटना का उल्लेख करते हैं की जब वे मद्रास अधिवेशन के अवसर पर मदनमोहन मालवीय के साथ गए तो उन्होंने खादी प्रदर्शन में अंधी औरत को सूत कातते देखा। जब उन्होंने चरखे की माला दी तो उस औरत ने चरखे पर हाथ फिराकर टूटी माला निकाल दी और फिर से सूत कातने लगी।''[10] इस प्रकार चरखा न जाने कितने बूढ़ों, अपाहिजों और निराधारों का सहारा बना। ये लोग सूत कातते थे और उससे जो आय प्राप्त होती उससे अपना जीवन–निर्वाह करते।

गाँधीजी ने खादी अभियान के माध्यम से देश को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया था, किन्तु इसमें उन्हें पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिली। मसलन, कुछ ही क्षेत्रों के मुस्लिमों ने इसमें हिस्सा लिया था। गाँधीजी ने यंग इंडिया में लिखा था– ''मैं बहुत से मुस्लिम संगठनों को विशेष रूप से खादी के लिए समर्पित नहीं जानता हूँ। न ही बहुत से मुस्लिम इस बहुआवश्यक राष्ट्रीय कार्य में जीवंत रुचि लेते पाए जाते है। वास्तव में बकरा ईद के दौरान एक मित्र ने मुझसे कहा– ''मुसलमानों को एक हाथ की उँगलियों पर गिना जा सकता है, जो खादी के कपड़े पहने हुए थें वे भारतीय कपड़े भी पहने नहीं हुए थे। मुझे आशा है कि यह समिति इस हालात को बदलेगी।''[11]

कई लोगों का मानना था कि खादी बहुत महँगी होती है, विदेशी कपड़े के मुकाबले में। इसलिए सभी के लिए खादी पहनना संभव नहीं था। गाँधीजी ने कहा कि

मिल में जो कपड़ा तैयार होता है वो भारी मशीनों से बनाया जाता है, जबकि खादी चरखे से काते गए सूत से। अतः दोनों में कोई मुकाबला नहीं हो सकता, मुकाबला तो बराबर वालों में होता है। इसलिए गाँधीजी ने स्वयं सीमित मात्रा में वस्त्र धारण करना प्रारंभ कर दिया। वे कंधे पर एक शॉल रखते थे और धोती पहनते थे। इस प्रकार उन्होंने लोगों को आवश्यकतानुसार वस्त्र पहनने का संदेश दिया।

गाँधीजी का खादी का अर्थशास्त्र अहिंसा का अर्थशास्त्र था। गाँधीजी ने खादी में सामाजिक स्वदेशी धर्म को देखा था। गाँधीजी की दृष्टि में स्वदेशी का अर्थ है हम किसी के सामने हाथ न फैलाएँ, अपने ही संसाधनों का अपनी ही बनाई हुई चीजों का अधिक–से–अधिक प्रयोग करें। गाँधीजी का भारत गाँवों में बसता था। उनका विचार था कि हमें गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। हमें उनकी मूढ़ता अंधविश्वास और संकुचित दृष्टि को दूर करना है। वे गाँवों को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे।

''गाँधी की ग्राम स्वराज्य की कल्पना यह थी कि ऐसा पूर्ण गणतंत्र हो जो अपनी मुख्य जरूरतों के लिए पड़ोसियों पर निर्भर न हो और फिर भी बहुतेरी जरूरतों के लिए एक–दूसरे पर निर्भर हो, जिनमें दूसरों पर निर्भरता जरूरी है। इस तरह हर गाँव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरतों का तमाम अनाज और कपड़ा खुद पैदा करे।''[12] इसलिए उन्होंने शारीरिक श्रम और चरखा चलाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा– ''जब तक हम हाथ से सूत नहीं कातेंगे तब तक हमारी पराधीनता ऐसे ही बनी रहेगी। इस प्रकार उन्होंने धन का एक ऐसा स्रोत खोज निकाला जो सम्पूर्ण संसार में अद्भुत है।''

इस प्रकार गाँधीजी ने खादी के वस्त्र पहनकर एक सिपाही के रूप में अपने देश को स्वावलंबी बनाया और स्वराज की प्राप्ति की। स्वदेशी धर्म के अन्तर्गत अपने देश का धर्म, भाषा, राजनीतिक पद्धतियाँ आदि को अंगीकार करना आवश्यक माना जाता है, परंतु स्वदेशी की धारणा बहिष्कार वाली धारणा नहीं है तथा इसमें घृणा का कोई भाव नहीं है। स्वदेशी व्रत के अन्तर्गत सभी वस्तुओं का त्याग न करके उन्हीं विदेशी वस्तुओं का त्याग किया जाय जिसका उत्पादन अपने देश में होता है तथा जिनके उपयोग के बिना हमारे समाज के कुछ अंग अपनी जीविका खो देते हैं। गाँधीजी के स्वदेशी व्रत,

संकीर्णता, स्वार्थ आदि दोषों से मुक्त था। यह अहिंसा और प्रेम का पर्याय है। जब अधिकांश भारतीय अपने दैनिक जीवन में विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने लग गए तब गाँधीजी ने स्वदेशी पर बल दिया, विदेशी वस्तुओं का त्याग किया। गाँधीजी ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया, क्योंकि वे ही हमारी वस्त्र बनाने की कारीगरी और क्षमता को नष्ट कर रहा था। वस्तुतः गाँधीजी ने चरखा के माध्यम से देश की कारीगरी को दिखाया और सभी को स्वावलंबी बनाने का प्रयास किया और साथ ही उन्होंने चरखा को स्वतंत्रता संग्राम का महत्त्वपूर्ण हथियार बनाया।

संदर्भ

1. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खण्ड–4, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ. 7
2. वही, पृ. 8
3. वही, पृ. 9
4. स्वर सरिता पत्रिका, पृ. 13
5. रवीश, सुधांशु, गांधी चिंतन, आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 141
6. वही, पृ. 142
7. जेरजानी विट्टल दास, खादी की कहानी, खादी ग्रामोद्योग आयोग, पृ. 105
8. जोशी दिव्या, गांधी ऑन खादी, नवजीवन प्रकाशन हाउस, अहमदाबाद, 1955, पृ. 43
9. वही, पृ. 55
10. वही, पृ. 51
11. वही, पृ. 45
12. मोहनराव, यू.एस., महात्मा गाँधी का संदेश, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 89